(५१)

एम.एच.डी

एम.ए. हिंदी

एम.ए. हिन्दी प्रथम वर्ष के सत्रीय कार्य
(जुलाई 2011 एवं जनवरी 2012 सत्रों के लिए)

एम.एच.डी.-2 : आधुनिक हिंदी काव्य
एम.एच.डी.-3 : उपन्यास एवं कहानी
एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ
एम.एच.डी.-6 : हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-100 068

सत्रीय कार्य- 2011-12

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.

प्रिय छात्र/छात्राओ,

यह एम.ए. हिंदी प्रथम वर्ष के सत्रीय कार्यों की पुस्तिका है। इसमें एम.एच.डी.-02, 03, 04 और 06 पाठ्यक्रमों के सत्रीय कार्य हैं। ये 8-8 क्रेडिट के पाठ्यक्रम हैं और आपको हर पाठ्यक्रम में एक-एक सत्रीय कार्य करना होगा। प्रत्येक सत्रीय कार्य 100 अंकों का है। प्रत्येक सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे गए हैं।

एम.ए. कार्यक्रम में अध्ययन के लिए आपको कई खंडों में पाठ्य सामग्री भेजी गई है। साथ ही पाठ्यक्रमों में अतिरिक्त अध्ययन के लिए 'विवेचना' नाम से आलोचनात्मक लेखों के संग्रह भेजे गए हैं। पाठ्यक्रम 2, 3 तथा 4 में 'विविधा' नाम से मूल साहित्यिक कृतियों का संकलन किया गया है। पाठ्यक्रमों में शामिल नाटक और उपन्यासों को प्राप्त करने की व्यवस्था आपको स्वयं करनी होगी। आपसे अपेक्षा की जाती है कि सत्रीय कार्य करने से पहले इन सभी कृतियों को पढ़ लें।

एम.ए. स्तर पर परीक्षा में पूछे जाने वाले सवाल केवल पाठ्य पुस्तकों तक सीमित नहीं होते। अतः छात्रों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे उपलब्ध कराई गई सामग्री के अतिरिक्त पुस्तकालयों से अन्य पुस्तकों और पत्रिकाओं का भी अध्ययन करें, जिससे ज्ञान में वृद्धि हो।

उद्देश्य : सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्यक्रम से संबंधित सामग्री को कितना पढ़ा-समझा है और उसका विवेचन-विश्लेषण और मूल्यांकन करने की क्षमता कितनी अर्जित की है। सत्रीय कार्यों का उद्देश्य यह भी है कि पाठ्य सामग्री के अध्ययन के पश्चात् आप उसके संबंध में स्वयं अपना दृष्टिकोण विकसित कर सकें और उन्हें अपने शब्दों में लिख सकें। इसका तात्पर्य यह है कि विश्वविद्यालय द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री को आप पुनर्प्रस्तुत न करें। बल्कि पूछे गए प्रश्नों का उत्तर सोच-विचारकर अपने शब्दों में लिखें। आपके उत्तर में आपका अध्ययन, आलोचनात्मक दृष्टि, रचनाओं के बारे में आपकी अपनी समझ और भाषा पर आपका अधिकार व्यक्त होना चाहिए। आपके सत्रीय कार्य का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक इन सभी बातों को ध्यान में रखेंगे।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. एम.ए. हिंदी के पाठ्यक्रमों के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए हुए निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।
2. अपनी उत्तर पुस्तिका के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अपना अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
3. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं की बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड और उस अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखिए जिससे आप संबद्ध हैं।

उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

अनुक्रमांक : .....
नाम : .....
पता : .....
.....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : .....
.....

सत्रीय कार्य कोड : .....
.....

अध्ययन केंद्र का नाम/कोड : .....
.....

दिनांक.....

4. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज का इस्तेमाल करें और उन कागजों को अच्छी तरह से बाँध लें।
5. प्रत्येक उत्तर से पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।
6. अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।
7. सत्रीय कार्य की उत्तर पुस्तिका जाँच के लिए अपने अध्ययन केंद्र के संचालक के पास **जुलाई 2011 सत्र के लिए 31 मार्च 2012 एवं जनवरी 2012 सत्र के लिए 30 सितंबर 2012** तक अवश्य जमा करा दें।

प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें :

1. प्रश्नों में जो पूछा गया है, उसको अच्छी तरह समझ कर उत्तर लिखें। जो नहीं पूछा गया है, उसे न लिखें। जितना पूछा गया है, उतना ही लिखें।
2. व्याख्या से संबंधित काव्यांशों में, संदर्भ, प्रसंग, व्याख्या और भाषा, शैली या अन्य किसी विशेष बात का उल्लेख करें। इन सभी पहलुओं के लिए अंक निर्धारित होते हैं।
3. आपका उत्तर सुसंगत, सुबोधगम्य और स्पष्ट हो।
4. वाक्यों और अनुच्छेदों के बीच क्रमबद्धता हो।
5. आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।
6. उत्तर साफ और सुंदर अक्षरों में लिखें तथा जिन बातों पर बल देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दें।
7. अपने पास सत्रीय कार्य के उत्तर की प्रति अवश्य रखें।

शुभकामनाओं के साथ!

नोटः याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है। अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

एम.एच.डी-2 : आधुनिक हिंदी-काव्य

सत्रीय कार्य

(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खण्डों पर आधारित)

सत्रीय कार्य कोड : एमएचडी 2/टीएमए/2011 12

कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 300 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 12×3=36

क)

मधु राका मुसक्याती
पहले देखा जब तुमको
परिचित से जाने कब
तुम लगे उसी क्षण हमको।

परिचय राका जलनिधि का
जैसे होता हिमकर से
ऊपर से किरणें आतीं
मिलती हैं गले लहर से।

मैं अपलक इन नयनों से
निरखा करता उस छवि को
प्रतिभा डाली भर लाता
कर देता दान सुकवि को।

ख)

खुब गए
दूधिया निगाहों में
फटी बिवाइयोंवाले खुरदरे पैर

धँस गए
कुसुम कोमल मन में
गुट्ठल घट्ठोंवाले कुलिश-कठोर पैर

रहे थे गति
रबड़-विहीन ठूँठ पैडलों को
चला रहे थे
एक नहीं, दो नहीं, तीन-तीन चक्र
कर रहे थे मात त्रिविक्रम वामन के पुराने पैरों को
नाप रहे थे धरती का अनहद फासला
घंटों के हिसाब से ढोए जा रहे थे!

ग)

कितनी दूरियों से कितनी बार
कितनी डगमग नावों में बैठ कर
मैं तुम्हारी ओर आया हूँ
ओ मेरी छोटी-सी ज्योति!
कभी कुहासे में तुम्हें न देखता भी
पर कुहासे की ही छोटी-सी रूपहली झलमल
पहचानता हुआ तुम्हारा ही प्रभा-मण्डल।

2. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 800 शब्दों में दीजिए : 16×4=64

(क) भारतेंदु के काव्य में भारतीय नवजागरण के प्रभावों को रेखांकित कीजिए।

(ख) निराला की काव्य-चेतना पर प्रकाश डालिए।

(ग) शमशेर बहादुर सिंह की कविता में मौजूद निजता के विविध रूपों को व्याख्यायित कीजिए।

(घ) नई कविता के प्रतिनिधि कवि के रूप में रघुवीर सहाय का मूल्यांकन कीजिए।

एम.ए. हिन्दी कार्यक्रम
उपन्यास एवं कहानी (एम.एच.डी.-3)

एम.ए. हिंदी का यह बीज पाठ्यक्रम हैं। इसमें आपने उपन्यास और कहानियों का अध्ययन किया है। इस पाठ्यक्रम में पाँच उपन्यास और चौदह कहानियों पर कुल 27 इकाइयाँ है। इनके अतिरिक्त आपको 'हिंदी कहानी विविधा' और 'हिंदी कहानी विवेचना' के अंतर्गत पंद्रह कहानियाँ और आलोचनात्मक लेख भी उपलब्ध कराए गए हैं।

इस सत्रीय कार्य में विवेचनात्मक प्रश्न पुछे गए हैं, जिनके लिए 90 अंक हैं। एक टिप्पणी का प्रश्न हैं। जिसके लिए 10 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रांत परीक्षा का भी यही ढाँचा होगा। सत्रीय कार्य के सारे प्रश्न अनिवार्य हैं, जबकि सत्रांत परीक्षा में विकल्प दिए जाएँगे।

सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड/एम.एच.डी. 3
सत्रीय कार्य कोड : एमएचडी:3/टीएमए//2011/12
कुल अंक : 100

1. छोटी जोत के किसान 'होरी' को किन हालातों में किसानी छोड़कर मजदूरी करनी पड़ी थी। गोदान के माध्यम से समीक्षा कीजिए। 10

2. 'धरती धन न अपना' के माध्यम से दलित स्त्री के तिहरे शोषण के यातनाजनक अनुभवों की सोदाहरण विवेचना कीजिए। 10

3. मिथिलाँचल के पिछड़ेपन, अंधविश्वास, अशिक्षा, पुरातन मान्यताओं के योगदान की मैला आँचल के माध्यम से समीक्षा कीजिए। 10

4. जातिप्रथा के अमानवीय स्वरूप की 'यह अंत नहीं' कहानी के आधार पर समीक्षा कीजिए। 10

5. 'ऐतिहासिक तथ्यों की गलत प्रस्तुति और भ्रामक समझ हिंदू-मुस्लिम वर्गों के बीच तनावपूर्ण वातावरण का कारण बनता है' इस कथन की सूखा बरगद के आधार पर समीक्षा कीजिए। 10

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए: 10 X 5=50
   (क) पारिवारिक संबंधों का बदलता स्वरूप और 'पिता' कहानी
   (ख) संवेदनहीन और अमानवीय शहरी संस्कृति और समाज
   (ग) 'चीफ की दावत' में अभिव्यक्त मध्यमवर्गीय अवसरवाद
   (घ) 'रोज' में चित्रित नारी जीवन का यथार्थ
   (ङ) धनिया का चरित्र चित्रण

एम.ए. हिंदी कार्यक्रम
नाटक और अन्य गद्य विधाएँ (एम एच डी-4)

एम.ए. हिंदी से संबंधित यह अनिवार्य पाठ्यक्रम है। इसमें आपने नाटकों और अन्य गद्य विधाओं का अध्ययन किया है। चार नाटक और चौदह गद्य रचनाओं पर कुल 26 इकाइयाँ हैं। इनके अतिरिक्त आपको हिंदी गद्य विवेचना के अंतर्गत कई आलोचनात्मक लेख भी दिए गए हैं। आशा है, आपने इन सभी का अध्ययन कर लिया होगा। इनके अध्ययन से आपको सत्रीय कार्य करने में मदद मिलेगी।

अब तक चार क्रेडिट के पाठ्यक्रम में दो सत्रीय कार्य और आठ क्रेडिट के पाठ्यक्रम में तीन सत्रीय कार्य करने होते थे। लेकिन विश्वविद्यालय ने 2007 से इस नीति में परिवर्तन कर दिया है और अब एम.ए. के सभी पाठ्यक्रमों में विद्यार्थी को एक-एक ही सत्रीय कार्य करने होंगे। इस सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम में से प्रश्न पूछे जाएँगे।

सत्रीय कार्य और सत्रांत परीक्षा में प्रश्न पत्र का ढाँचा कमोबेश एक-सा होगा। इसलिए सत्रीय कार्य को गंभीरता से लें। इनमें आपसे तीन तरह के प्रश्न पूछे जाएंगे।

- आपको पाठ्यक्रम में शामिल रचनाओं में से कुछ गद्यांशों की व्याख्या करनी होगी। यह प्रश्न अनिवार्य होगा जिन पर लगभग 40 अंक के प्रश्न पूछे जाएंगे।

- इसमें कुछ निबंधात्मक प्रश्न होंगे जिसमें पाठ्यक्रम में शामिल रचनाओं पर आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। आलोचनात्मक प्रश्न रचना की अंतर्वस्तु, प्रतिपाद्य, चरित्र-चित्रण, भाषा, शिल्प, महत्त्व और अन्य रचनाओं से तुलना से संबंधित हो सकते हैं। नाटक से संबंधित सवालों में रंगमंच प्रस्तुति और अभिनेयता के बारे में भी सवाल होंगे।

- आपसे विभिन्न विषयों पर टिप्पणियाँ करने के लिए भी दी जाएँगी, जो विवरणात्मक और आलोचनात्मक दोनों क्षेत्रों से हो सकती हैं।

- निबंधात्मक और टिप्पणीपरक प्रश्नों के लिए लगभग 60 अंक निर्धारित होंगे। अंकों का यही विभाजन सत्रांत परीक्षा पर भी लागू होगा।

सत्रीय कार्य
(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खण्डों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एमएचडी-4
सत्रीय कार्य कोड : एमएचडी-4/टीएमए/2011-12
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10X4=40

क) यहीं तू भूलती है। मुझे तो इसी में सुख मिलता है। मेरा हृदय मुझसे अनुरोध करता है, मचलता है रूठता है, मैं उसे मनाती हूँ। आँखें प्रणय-कलह, उत्पन्न कराती हैं, चित्त उत्तेजित करता है, बुद्धि झिडकती है, कान कुछ सुनते ही नहीं! मैं सबको समझाती हूं, विवाद मिटाती हूं। सखी! फिर भी मैं इसी झगड़ालू कुटुंब में गृहस्थी संभालकर, स्वस्थ होकर बैठती हूं।

ख) मैं यहां थी, तो मुझे कई बार लगता था कि मैं एक घर में नहीं, चिड़ियाघर के एक पिंजरे में रहती हूँ जहाँ... आप शायद सोच भी नहीं सकते कि क्या-क्या होता रहा है यहाँ। डैडी का चीखते हुए ममा के कपड़े तार-तार कर देना... उनके मुँह पर पट्टी बाँधकर उन्हें बंद कमरे में पीटना... खींचते

हुए गुसलखाने में कमोड पर ले जाकर... (सिहरकर) मैं तो बयान भी नहीं कर सकती कि कितने-कितने भयानक दृश्य देखे हैं इस घर में मैंने। कोई भी बाहर का आदमी उस सबको देखता-जानता, तो यही कहता कि क्यों नहीं बहुत पहले ही ये लोग... ?

ग) मैं इसके खिलाफ लड़ूँगा। मैं आंदोलन करूँगा और उन्हें तोड़ूँगा! मैं आलमगीर लड़ाइयाँ करूँगा। देखो मैं क्या करता हूँ। मैं बड़ी-बड़ी लाइब्रेरियों में आग लगा दूँगा। मैं शहरों और पर्वतों को स्याही की बूँद की तरह नक्शे से पोंछ दूँगा। यह आदमी है, जानवर नहीं है। यह केवल अंधा-कुआँ है... मेरी बीबी बादलों में रहती है, पागल आया हम सबको बचाएगी।

घ) श्रद्धेय के भी दर्जे होते हैं। तीसरे दर्जे का श्रद्धेय प्रेरणा नहीं देता। वह शर्म देता है। गांधीजी की बात अलग थी। वे तीसरे का भी पहले दर्जे की महिमा दे देते थे। हम तो पहल दर्जे में बैठकर भी तीसरे की हीनता अनुभव करते हैं। संत और बुद्धिजीवी में यही फर्क है। मुझे विशेष सावधान रहना पड़ता है।

2 कथावस्तु के आधार पर 'अंधेर नगरी' नाटक की प्रासंगिकता और महत्त्व पर प्रकाश डालिए। 10

3 'अंधायुग' नाटक के आधार पर लेखक के सामाजिक दृष्टिकोण का विवेचन कीजिए। 10

4 'आधे-अधूरे' अथवा 'स्कन्दगुप्त' नाटक की रंगमंचीय विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 10

5 'लोभ और प्रीति' निबंध के आधार पर एक निबंधकार के रूप में रामचंद्र शुक्ल का मूल्यांकन कीजिए। 10

निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए : 5X4=20

(क) 'स्कन्दगुप्त' का नायक

(ख) 'ठाकुरी ' की भाषा

(ग) ' ' और प्रेमचंद

(घ) संस्मरण के रूप में 'वसंत का अग्रदूत'

एम.ए. हिन्दी कार्यक्रम
हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास (एम.एच.डी.- 6)

एम.ए. हिन्दी का यह अनिवार्य पाठ्यक्रम है। 'हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास' में आपने आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक की विभिन्न काव्य प्रवृत्तियों, हिन्दी गद्य साहित्य एवं भाषा के विकास का ऐतिहासिक दृष्टि से अध्ययन किया है।

सत्रीय कार्य का एक और उद्देश्य है -सत्रांत परीक्षा के लिए आपको तैयार करना। सत्रांत परीक्षा में जो सवाल आपसे पूछे जाएँगे उनका ढाँचा सत्रीय कार्य में पूछे गए सवालों जैसा ही होगा। इसीलिए सत्रीय कार्य को आप गंभीरता से लें। सत्रीय कार्य और सत्रांत परीक्षा में पूछे गए सवाल दो प्रकार के होंगे।

1. कुछ प्रश्न निबंधात्मक या विवेचनात्मक होंगे जो पाठ्यक्रम में शामिल हिन्दी काव्य प्रवृत्तियों, गद्य साहित्य तथा हिन्दी भाषा के ऐतिहासिक विकास से संबंधित हो सकते हैं।

2. दूसरे प्रकार के प्रश्नों में आपको विभिन्न विषयों पर विवरणात्मक/आलोचनात्मक टिप्पणियाँ लिखनी होंगी। निबंधात्मक प्रश्नों के लिए लगभग 60 प्रतिशत तथा टिप्पणीपरक प्रश्नों के लिए 40 प्रतिशत अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रांत परीक्षा में निबंधात्मक प्रश्न 60 से 80 प्रतिशत के हो सकते हैं।

सत्रीय कार्य
(खंड 1 से 8 पर आधारित)

सत्रीय कार्य कोड: एम एच डी-6/टी एम ए/2011-2012
कुल अंक 100

(1)	संत साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का विवेचन कीजिए	12
(2)	रीतिकालीन कविता की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।	12
(3)	हिन्दी में प्रगतिशील काव्य परंपरा पर विचार कीजिए।	12
(4)	शुक्ल युगीन आलोचना पर निबंध लिखिए।	12
(5)	भारत के भाषा परिवारों का वर्णन कीजिए।	12

(6) निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए: 8× 5 40

(क) राष्ट्रीय-सांस्कृतिक कविता
(ख) छायावाद के प्रवर्तन का प्रश्न
(ग) प्रयोजनमूलक हिन्दी
(घ) भारतेन्दु युगीन उपन्यास
(ङ) रासकाव्य परंपरा

SOH/IGNOU/P.O. 5T/July 2011
Printed at Raj Printer, A-9, B-2, Tronica city, Loni (Gzb.)